-गण्डमूल नक्षत्र-

अश्वनी, आश्लेषा, मघा, जेष्ठा, मूल-रेवती-ये ६ नक्षत्र गणमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता-पिता, कुल या अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन, वैभव, ऐश्वर्य, हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे। प्रसूति स्नान के बाद शुभ मुहूर्त में उसी नक्षत्र में शान्ति करा लें तथा गौ-स्वर्णदान उत्तम वेदपाठी को देकर शुभ बेला में बालक के मुख को देखने का विधान है।

-रवि-पुष्य योग-

रविवार को पुष्य नक्षत्र का संयोग यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र की सिद्धि तथा औषधि प्रयोग के लिए विशेष फलप्रद है।

१. ८ अगस्त रात्रि १२.३० बजे से ९ अगस्त सूर्योदय तक।
२. ५ सितम्बर प्रातः १०.५० से ६ सितम्बर सूर्योदय तक।
३. ३ अक्टूबर सूर्योदय से ३ अक्टूबर सांय ५.५० बजे तक।

-गुरु-पुष्य योग-

१. २५ मार्च प्रातः १०.४० से २६ मार्च सूर्योदय तक।
२. २२ अप्रैल सूर्योदय से २२ अप्रैल मध्याह्न ३.२५ बजे तक।
३. २३ दिसम्बर १.५० दोपहर से २४ दिसम्बर सूर्योदय तक।
४. २० जनवरी सूर्योदय से २० जनवरी ९.१५ बजे रात्रि तक।
५. १७ फरवरी सूर्योदय से १७ फरवरी प्रातः ८.१० बजे तक।

-शनि साढ़ेसाती ढैय्या-

शनि वर्ष पर्यन्त कन्या राशि में स्थित रहेंगे, फलतः सिंह, कन्या, तुला राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती व मिथुन, कुम्भ राशि वालों के लिए शनि की ढैय्या रहेगा।

सिंह राशि- इस राशि में शनि की साढ़ेसाती पैरों में उतरते हुए है। फलतः पारिवारिक क्लेश, खर्चों में वृद्धि, उदासीनता, व्यवसाय में शिथिलता, इच्छापूर्ति में देरी, यात्रा भ्रमण में परेशानी रहेगी।

कन्या राशि- इस राशि में साढ़ेसाती उदर में (मध्य में) है। फलतः शरीर कष्ट, बन्धु विरोध, उत्साह में कमी, राजविरोध, जीवनसाथी को कष्ट व उदर विकार रहेगा।

तुला राशि- इस राशि में साढ़ेसाती मस्तक में चढ़ती हुई है। फलतः परिवार में क्लेश खर्चों में वृद्धि, तनाव की स्थिति, गलत निर्णय, बुद्धि में भ्रम, भटकाव की स्थिति व धन हानि के प्रबल योग है।

मिथुन राशि-(ढैया) इस राशि में शनि की ढैय्या है। फलतः शिथिलता व राजपक्ष से प्रतिकूलता रहेगी।

कुम्भ राशि-(ढैया) इस राशि वालों को शनि की ढैय्या है। फलतः शरीर कष्ट, सन्तान से कष्ट व धन हानि के प्रबल योग हैं।

-राहु काल-

सोमवार	-	प्रातः ७=३० बजे से ९ बजे प्रातः तक।
मंगलवार	-	अपरान्ह ३ बजे से ४=३० बजे तक।
बुधवार	-	दोपहर १२ बजे से १=३० बजे तक।
बृहस्पतिवार	-	दोपहर १=३० बजे से ३ बजे प्रातः तक।
शुक्रवार	-	प्रातः १०=३० बजे से दोपहर १२ बजे तक।
शनिवार	-	प्रातः ९ बजे से प्रातः १०=३० बजे तक।
रविवार	-	सांय ४=३० बजे से सांय ६ बजे तक।

राहुकाल डेढ़ घण्टे का लगभग होता है जो शुभ कार्यों में अनिष्टकारक होता है। अतः कार्य के आरम्भ में राहु काल को छोड़ देना चाहिए।